INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: X	Department: Hindi	Date of submission: NA
Question Bank: 11	**Topic: तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेन्द्र**	Note: Pl. file in portfolio

तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेन्द्र- प्रहलाद अग्रवाल (1947)

प्रश्न 1. 'तीसरी कसम' फिल्म को कौन-कौन से पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है?
उत्तरः 'तीसरी कसम' फिल्म को निम्नलिखित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है- (1) राष्ट्रपति स्वर्णपदक। (ii) बंगाल जनलिस्ट एसोसिएशन का सर्वश्रेष्ठ फिल्म पुरस्कार। (iii) मास्को फिल्म फेस्टिवल पुरस्कार।

प्रश्न 2. शैलेंद्र ने कितनी फिल्में बनाई?
उत्तरः शैलेंद्र ने केवल एक ही फिल्म बनाई थी। इस फिल्म का नाम 'तीसरी कसम' है।

प्रश्न 3. राजकपूर द्वारा निर्देशित कुछ फिल्मों के नाम है बताइए ?
उत्तर: राजकपूर द्वारा निर्देशित कुछ फिल्मों के नाम है - मेरा नाम जोकर, जागते रहो, मैं और मेरा दोस्त, सत्यम् - शिवम् - सुन्दरम्, जिस देश में गंगा बहती है ।

प्रश्न 4. 'तीसरी कसम' फिल्म के नायक व नायिकाओं के नाम बताइए और फिल्म में इन्होंने किन पात्रों का अभिनय किया है ?
उत्तर: 'तीसरी कसम' फिल्म के नायक का नाम है - राजकपूर। उसने हीरामन नामक गाड़ीवान का अभिनय किया। नायिका वहीदा रहमान ने नौटंकी कलाकार हीराबाई का अभिनय किया है ।

प्रश्न 5. फिल्म 'तीसरी कसम' का निर्माण किसने किया था?
उत्तर: फिल्म 'तीसरी कसम' का निर्माण गीतकार शैलेंद्र ने किया था ।

प्रश्न 6. राजकपूर ने 'मेरा नाम जोकर' के निर्माण के समय किस बात की कल्पना भी नहीं की थी?
उत्तर: राजकपूर ने 'मेरा नाम जोकर' के निर्माण के समय इस बात की कल्पना भी नहीं की थी कि इस फिल्म के एक भाग को बनाने में ही छह वर्ष का समय लग जाएगा।

प्रश्न 7. राजकपूर की किस बात पर शैलेन्द्र का चेहरा मुरझा गया?
उत्तर: राजकपूर ने शैलेंद्र की फिल्म में काम करने के लिए मजाक में एडवांस माँग लिया। शैलेंद्र ने सोचा कि राजकपूर उससे पारिश्रमिक एडवांस माँग रहे हैं। यह सोचकर उनका चेहरा मुरझा गया।

प्रश्न 8. फिल्म समीक्षक राजकपूर को किस तरह का कलाकार मानते थे?
उत्तर: फिल्म समीक्षक राजकपूर को आँखों से बात करने वाला कलाकार मानते थे।

प्रश्न 9. 'तीसरी कसम फिल्म को' सैल्यूलाइड पर लिखी कविता' क्यों कहा गया है?
उत्तर: 'तीसरी कसम' फिल्म को सैल्यूलाइड पर लिखी कविता' इसलिए कहा गया है क्योंकि 'तीसरी कसम' फिल्म विशेष रूप से भावपूर्ण फिल्म थी। यह मानव अभिनीत कहानी नहीं अपितु फिल्मी रील पर लिखी हुई कोई कविता थी। उसकी संवेदना गहरी थी। अतः यह फिल्म एक कविता के समान ही है।

10. तीसरी कसम फिल्म को खरीददार क्यों नहीं मिल रहे थे?
उत्तर: 'तीसरी कसम' फिल्म को खरीददार इसलिए नहीं मिल रहे थे क्योंकि फिल्म-वितरकों को फिल्म की संवेदना समझ ही नहीं आई। 'तीसरी कसम' में कोई लुभावना मसाला नहीं था। वह शुद्ध साहित्यिक थी। उसमें करुणा का भाव बहुत गहरा था। इसलिए इस फिल्म को खरीददार नहीं मिल रहे थे।

प्रश्न 11. शैलेश के अनुसार कलाकार का कर्तव्य क्या है?
उत्तरः शैलेंद्र के अनुसार, कलाकार कर कर्तव्य है कि वह दर्शकों की रुचि के अनुसार ढलकर स्वयं को सस्ता न करे। वह यथासंभव दर्शकों की रुचियों का परिष्कार-संस्कार करें, उन्हें ऊँचा उठाए।

प्रश्न 12. फिल्मों में त्रासद स्थितियों का चित्रांकन ग्लोरिफाई क्यों कर दिया जाता है?
उत्तरः फिल्मों में त्रासद स्थितियों का चित्रांकन ग्लोरिफाई इसलिए कर दिया जाता है ताकि दर्शक उन्हें देखने की लालसा में फिल्म देखने आएँ और फिल्म खूब चले। यह दर्शकों की भावनाओं का शोषण करने का एक ढंग है।

प्रश्न 13. 'शैलेंद्र ने राजकपूर की भावनाओं को शब्द दिए हैं' - कथन से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर: हम इस बात से पूरी तरह सहमत हैं कि शैलेंद्र ने राजकपूर की भावनाओं को शब्द दिए हैं। राजकपूर जो कुछ कहना चाहते थे, उसे शैलेंद्र ने शब्दों के माध्यम से प्रकट किया है। राजकपूर अपनी भावनाओं को आँखों से व्यक्त करने की कला में कुशल थे। उन भावों को संवादों और गीतों में ढालने का काम शैलेंद्र ने किया। शैलेंद्र ने यह फिल्म बनाकर मानों राजकपूर की भावनाओं को ही वाणी दी थी।

प्रश्न 14. लेखक ने राजकपूर को एशिया का सबसे बड़ा शो-चैन कहा है। शौ-मैन से आप क्या समझते हैं?

उत्तर: शौ-मैन का अर्थ है विख्यात प्रतिनिधि आकर्षक व्यक्तित्व ऐसा व्यक्ति जो बहुत अधिक लोकप्रिय हो और मानवीय भावनाओं की दर्शनीय प्रस्तुति कर सके। जिसके नाम से ही फिल्में बिकती हों। इसके साथ-साथ फिल्मों के खरीददार जिसकी फिल्में हाथों-हाथों खरीद लेते हों। उसे **शौ-मैन** की संज्ञा दी जाती है।

प्रश्न 15. फिल्म 'श्री 420' के गीत 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ पर संगीतकार जयकिशन ने आपत्ति क्यों की?

उत्तरः फिल्म 'श्री 420' के गीत 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' में दिशाएँ दस कही गई हैं । संगीतकार जयकिशन को लगा कि इसकी जगह 'चारों दिशाओं' शब्द आना चाहिए। जबकि शैलेंद्र साहित्य-संस्कृति की गहरी समझ होने के नाते यह जानते थे कि वस्तुत: दिशाएँ दस होती हैं।

प्रश्न 16. राजकपूर द्वारा फिल्म की असफलता के खतरों से आगाह करने पर भी शैलेंद्र ने यह फिल्म क्यों बनाई ?

उत्तरः राजकपूर एक बड़े फिल्म निर्माता सफल अभिनेता और कुशल निर्देशक थे। जब शैलेंद्र ने 'तीसरी कसम' फिल्म बनाने का निश्चय प्रकट किया तब राजकपूर ने एक हितैषी की भाँति शैलेंद्र को फिल्म की असफलताओं के खतरों से आगाह करना अपना फर्ज समझा। परंतु शैलेंद्र भावुक हृदय कवि थे। उन्होंने इस फिल्म का निर्माण अपने मन की संतुष्टि के लिए किया ।

प्रश्न 17. 'तीसरी कसम' में राजकपूर का महिमामय व्यक्तित्व किस तरह हीरामन की आत्मा में उतर गया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः 'तीसरी कसम' फिल्म में राजकपूर का महिमामय व्यक्तित्व पूरी तरह से हीरामन गाड़ीवान की आत्मा में उतर गया है। इसका आशय यह है कि राजकपूर और हीरामन दोनों एकाकार हो गए हैं। वे हीरामन का अभिनय करते-करते हीरामन बन गए। फिल्म देखने से ऐसा प्रतीत होता है मानो राजकपूर का व्यक्तित्व हीरामन की आत्मा में उतर गया हो।

प्रश्न 18. लेखक ने ऐसा क्यों लिखा है कि 'तीसरी कसम' ने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया है?

उत्तरः लेखक ने ऐसा इसलिए लिखा है क्योंकि 'तीसरी कसम' फिल्म को लेखक फणीश्वरनाथ रेणु की मूल कहानी के अनुरूप ही बनाया गया है। इस फिल्म की पटकथा स्वयं रेणु ने ही लिखी थी।

सामान्यतः किसी साहित्य-रचना पर फिल्म बनाते समय उसमें काफी कुछ परिवर्तन कर दिया जाता है। लेकिन तीसरी कसम अकेली ऐसी फिल्म है जिसमें उपन्यासकार के उपन्यास को यथावत रख दिया गया है।

प्रश्न 19. शैलेंद्र के गीतों की क्या विशेषताएँ हैं? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तरः शैलेंद्र के गीत अत्यंत भावपूर्ण थे। उन्होंने कभी धन की लालसा में स्तरहीन गीत नहीं लिखे। उनके गीतों की यह एक विशिष्टता थी कि उनके गीतों में घटियापन नहीं था। शैलेंद्र द्वारा रचित गीत उनकी दिल की गहराइयों से निकले हुए थे अत: वे सहज ही श्रोता के दिल को छू लेते थे। यही कारण है कि उनका लिखा प्रत्येक गीत अत्यंत लोकप्रिय हुआ । उनके गीतों में करुणा, संवेदना इत्यादि के भाव सहज ही दिख जाते थे।

प्रश्न 20. फिल्म निर्माता के रूप में शैलेंद्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तरः फिल्म निर्माता के रूप में 'तीसरी कसम' शैलेंद्र की पहली और अंतिम फिल्म थी। उन्होंने इस फिल्म का निर्माण पैसा कमाने के उद्देश्य से नहीं किया था। वे निर्माता होते हुए भी साहित्यिक बने रहे। वे फिल्मी चकाचौंध में रहते हुए भी धन और यश-लिप्सा से दूर बने रहे। उन्होंने फिल्मों को साहित्यिक बनाने का प्रयास किया ।

प्रश्न 21. शैलेंद्र के निजी जीवन की छाप उनकी फिल्म में झलकती है। कैसे?

उत्तरः शैलेंद्र अत्यंत सौम्य, सरल एवं भावप्रवण व्यक्तित्व के आदमी थे। उनकी रचनाएँ भी उन्हीं की तरह सौम्य, सरल एवं स्पष्ट हुआ करती थी। अतः हम कह सकते हैं कि शैलेंद्र की फिल्म में उनका व्यक्तित्व झलकता है।

प्रश्न 22. लेखक के इस कथन से कि 'तीसरी कसम फिल्म कोई सच्चा कवि हृदय ही बना सकता था' आप कहाँ तक सहमत हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः लेखक के अनुसार तीसरी कसम' फिल्म कोई सच्चा कवि हृदय ही बना सकता था। मैं लेखक के इस कथन से अक्षरश: सहमत हूँ क्योंकि इस फिल्म की कलात्मकता अत्युत्तम है। शैलेंद्र एक संवेदनशील तथा भाव प्रवण कवि थे जो उनकी एकमात्र फिल्म 'तीसरी कसम' में उभर कर सामने आई है।

प्रश्न 23. उनका यह दृढ़ मंतव्य था कि दर्शकों की रुचि की आड़ में हमें उथलेपन को उन पर नहीं थोपना चाहिए। कलाकार का यह कर्तव्य भी है कि वह उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार करने का प्रयत्न करे। आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः शैलेंद्र एक सच्चे साहित्यकार एवं गीतकार थे। वे दर्शकों/श्रोताओं की उँगली पकड़कर चलने वाले नहीं थे। वे तो दर्शकों/श्रोताओं को अपनी उँगली पकड़वाकर चलाने में विश्वास रखते थे। वे अपना यह दायित्व मानते थे कि दर्शकों की रुचि की आड़ लेकर हमें उनको उथला या हल्का नहीं बनाना, अपितु हमें तो उनकी रुचियों को परिष्कृत करना है।

प्रश्न 24. व्यथा आदमी को पराजित नहीं करती, उसे आगे बढ़ने का संदेश देती है। आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः प्रश्नोक्त पंक्ति लेखक ने शैलेंद्र के गीतों के संदर्भ में लिखी है। शैलेंद्र के गीत केवल मनोरंजन के लिए ही नहीं अपितु उनके गीत चुनौतियों से जूझने का संदेश भी देते हैं। कवि शैलेंद्र अपने गीतों द्वारा आमजन को यह बताना चाहते थे कि थक-हारकर बैठ जाना कदापि उचित नहीं होता। अपने लक्ष्य के लिए सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए। अपनी प्रत्येक व्यथा और गलतियों से सीखना चाहिए। उनसे हार जाना बुद्धिमानी नहीं है।

प्रश्न 25. दरअसल इस फिल्म की संवेदना किसी दो से चार बनाने वाले की समझ से परे है। कथन का आशय स्पष्ट करें।

उत्तरः 'तीसरी कसम' फिल्म की संवेदना किसी आम आदमी की समझ के परे थी। अन्य निर्माता फिल्म की सफलता के लिए कुछ भी करने को तैयार होते हैं । उनका एकमात्र उद्देश्य लाभ कमाना होता है परंतु कवि शैलेंद्र ने अपनी फिल्म में किसी से कोई समझौता नहीं किया और अपनी इच्छानुसार सस्ते लोक लुभावन मसालों से दूर एक साफ-सुथरी फिल्म बनाई।

प्रश्न 26. उनके गीत भाव-प्रवण थे दुरूह नहीं। आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः शैलेंद्र के गीतों में भावनाओं का प्रवाह है। उनके गीतों की एक अन्य विशेषता सरलता है। उन्होंने अपने गीतों में कठिन शब्दों के स्थान पर सरल शब्दों का प्रयोग किया है जिससे सामान्य दर्शक भी उसे समझ लेता है। उनके गीतों में करुणा के साथ-साथ संघर्ष की भावना भी दिखाई देती है। वे बिल्कुल सहज, सरल और प्रवाहपूर्ण होते थे।

प्रश्न - निम्नलिखित पठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :

1. 'तीसरी कसम' यदि एकमात्र नहीं तो चंद उन फ़िल्मों में से है जिन्होंने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया है। शैलेंद्र ने राजकपूर जैसे स्टार को 'हीरामन' बना दिया था। हीरामन पर राजकपूर हावी नहीं हो सका और छींट की सस्ती साड़ी में लिपटी 'हीराबाई' ने वहीदा रहमान की प्रसिद्ध ऊँचाइयों को बहुत पीछे छोड़ दिया था। कजरी नदी के किनारे उकडू बैठा हीरामन जब गीत गाते हुए हीराबाई से पूछता है 'मन समझती हैं न आप?' तब हीराबाई ज़ुबान से नहीं, आँखों

से बोलती है। दुनिया भर के शब्द उस भाषा को अभिव्यक्ति नहीं दे सकते। ऐसी ही सूक्ष्मताओं से स्पंदित थी 'तीसरी कसम'। अपनी मस्ती में डूबकर झूमते गाते गाड़ीवान 'चलत मुसाफिर मोह लियो रे पिंजड़े वाली मुनिया।' टप्पर-गाड़ी में हीराबाई को जाते हुए देखकर उनके पीछे दौड़ते-गाते बच्चों का हुजूम 'लाली-लाली डोलिया में लाली रे दुलहनिया', एक नौटंकी की बाई में अपनापन खोज लेने वाला सरल हृदय गाड़ीवान। अभावों की जिंदगी जीते लोगों के सपनीले कहकहे।

बहुविकल्पीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दिए गए विकल्पों से चुनें-

(क) तीसरी कसम फिल्म की सबसे बड़ी विशेषता क्या है?

(i) साहित्य रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय (ii) अच्छी संगीत रचना

(iii) सुप्रसिद्ध नायक-नायिका (iv) उपरोक्त सभी

(ख) तीसरी कसम फिल्म में राजकपूर का नाम क्या था?

(i) सुगामन (ii) रहिमन (iii) हीरामन (iv) होराचंद

(ग) 'तीसरी कसम' फिल्म में वहीदा रहमान का नाम था-

(i) हीरामन (ii) हीराबाई (iii) तुलसी (iv) गंगूबाई

(घ) तीसरी कसम की नायिका की भाषा की कौन-सी विशिष्टता उसे विशिष्ट बनाती है?

(i) आँखों से बोलना (ii) नृत्य करना (iii) सुंदरता (iv) आकर्षक व्यक्तित्व

(ङ) 'अभावों में जिंदगी जीते' लोगों के सपनीले कहकहे। पंक्ति किस बारे में कही गई है?

(i) तीसरी कसम की मूल कहानी के बारे में (ii) राजकपूर के बारे में

(iii) वहीदा रहमान के बारे में (iv) उपरोक्त किसी के बारे में नहीं

2. हमारी फिल्मों की सबसे बड़ी कमजोरी होती है, लोक तत्त्व का अभाव। वे जिंदगी से दूर होती हैं यदि त्रासद स्थितियों का चित्रांकन होता है तो उन्हें ग्लोरीफाई किया जाता है। दुख का ऐसा वीभत्स रूप प्रस्तुत होता है जो दर्शकों का भावनात्मक शोषण कर सके और 'तीसरी कसम' की यह खास बात थी कि वह दुख को भी सहज स्थिति में, जीवन-सापेक्ष प्रस्तुत करती है।

मैंने शैलेंद्र को गीतकार नहीं, कवि कहा है। वे सिनेमा की चकाचौंध के बीच रहते हुए यश और धन-लिप्सा से कोसों दूर थे। जो बात उनकी जिदगी में थी वही उनके गीतों में भी। उनके गीतों में सिर्फ करुणा नहीं, जूझने का संकेत भी था और वह प्रक्रिया मौजूद थी जिसके तहत अपनी मंजिल तक पहुँचा जाता है। व्यथा आदमी को पराजित नहीं करती, उसे आगे बढ़ने का संदेश देती

है। शैलेंद्र ने 'तीसरी कसम' को अपनी भावप्रवणता का सर्वश्रेष्ठ प्रदान किया। मुकेश की आवाज में शैलेंद्र का एक गीत तो अद्‌वितीय बन गया है-
सजनवा बैरी हो गए हमार चिठिया हो तो हर कोई बाँचे भाग न बाँचे कोय.....

(क) भारतीय फिल्मों की सबसे बड़ी कमजोरी होती है
(i) व्यवसायीकरण (ii) कमजोर कथानक (iii) दिशाहीन संगीत (iv) लोकतत्व का अभाव

(ख) भारतीय फिल्मों में दुख का चित्रण क्यों किया जाता है?
(i) दर्शकों की भावनाओं का शोषण करने के लिए (ii) अधिक आय के लिए
(iii) समाज के दुखों को उजागर करने हेतु (iv) उपरोक्त सभी

(ग) 'तीसरी कसम' फिल्म की विशिष्ट बात क्या थी?
(i) प्रसिद्‌ध नायक-नायिकाओं का होना (ii) कम बजट में बनना
(iii) दुख को सहज स्थिति में, जीवन सापेक्ष प्रस्तुत करना (iv) उपरोक्त सभी

(घ) शैलेंद्र के जीवन एवं फिल्मों में क्या समानता थी?
(i) फिल्मी चकाचौंध के बीच रहकर भी धन और यश से दूर रहना (ii) धन एवं सम्मान कमाना
(iii) अच्छे मित्रों का सहयोग लेना (iv) समाज की भलाई करना

(ङ) व्यथा मनुष्य को क्या संदेश देती है?
(i) भविष्य के लिए बचत का (ii) सभी कष्टों के प्रति सजग रहने का
(iii) किसी की बात पर ध्यान नहीं देने का (iv) आगे बढ़ने का

टप्पर गाड़ी